एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 12 (दिसम्बर, 2025)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

बछड़ों का प्रबंधन

अनुपम सोनी[1], *हरसिमर प्रीत कौर[1], कांता गोदारा[1], दिव्यांशु शर्मा[1], इरुसप्पन इलियाराजा[2] एवं अनूप कुमार[3]
[1]पीएच.डी., पशुधन उत्पादन प्रबंधन प्रभाग, एनडीआरआई, करनाल, हरियाणा, भारत
[2]पीएच.डी., पशु आनुवंशिकी और प्रजनन प्रभाग, एनडीआरआई, करनाल, हरियाणा, भारत
[3]पीएच.डी., पशु प्रजनन स्त्री रोग एवं प्रसूति प्रभाग, एनडीआरआई, करनाल, हरियाणा, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: harsimar0303@gmail.com

भारत में सफल डेयरी फार्मिंग के लिए दुधारू बछड़ों की देखभाल और प्रबंधन एक अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू है। बछड़े भविष्य के झुंड का प्रतिनिधित्व करते हैं और उनका स्वास्थ्य और विकास डेयरी फार्म की भावी दुग्ध उत्पादन क्षमता को निर्धारित करते हैं। जीवन के प्रारंभिक चरणों में उचित प्रबंधन, मजबूत, रोग-प्रतिरोधी और उच्च उपज देने वाली वयस्क गायों और सांडों के विकास की नींव रखता है। जन्म के बाद के पहले कुछ महीने महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि बछड़े संक्रमण, तापमान परिवर्तन और पोषण संबंधी कमियों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं। इसलिए, उचित कोलोस्ट्रम, संतुलित आहार, स्वच्छ पेयजल, स्वच्छ आवास और समय पर स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करना उनके अस्तित्व और विकास को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत में जहाँ डेयरी फार्मिंग लाखों किसानों के लिए आजीविका का एक प्रमुख स्रोत है, कृषि उत्पादकता और आर्थिक लाभ में सुधार के लिए वैज्ञानिक और व्यवस्थित बछड़ा प्रबंधन पद्धतियाँ आवश्यक हैं। बछड़ों के पालन की अच्छी पद्धतियों को अपनाकर, किसान मृत्यु दर को कम कर सकते हैं, विकास दर में सुधार कर सकते हैं और भविष्य में एक स्वस्थ और उत्पादक डेयरी झुंड विकसित कर सकते हैं।

जन्म के तुरंत बाद देखभाल

जन्म के तुरंत बाद, बछड़े की बहुत सावधानी से देखभाल की जानी चाहिए। बछड़े को ठीक से साँस लेने देने के लिए नाक और मुँह में जमा बलगम को निकालना चाहिए। फिर बछड़े को एक साफ और सूखे तौलिये से धीरे से रगड़ना चाहिए ताकि रक्त संचार बढ़े और वह खड़ा हो सके। नाभि नाल एक संवेदनशील अंग है और आसानी से संक्रमित हो सकता है, इसलिए जन्म के तुरंत बाद इसे 7% आयोडीन के घोल में डुबोना चाहिए और अगले दो दिनों तक दोहराना चाहिए। इससे नाभि या जोड़ों की बीमारी जैसे जीवाणु संक्रमण से बचाव होता है। ठंड, निमोनिया और ठंड के तनाव से बचने के लिए, बछड़े को, खासकर सर्दियों में, साफ, सूखी और गर्म जगह पर रखना चाहिए।

कोलोस्ट्रम पिलाना

कोलोस्ट्रम, प्रसव के बाद माँ द्वारा उत्पादित पीला, गाढ़ा दूध है और यह बछड़े के जीवित रहने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें उच्च स्तर के एंटीबॉडी होते हैं जो प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करने और बछड़े को शुरुआती बीमारियों से बचाने में मदद करते हैं। जन्म के एक घंटे के भीतर कोलोस्ट्रम पिलाना चाहिए, क्योंकि पहले कुछ घंटों के बाद बछड़े की आंत की एंटीबॉडी अवशोषित करने की क्षमता तेज़ी से कम हो जाती है। पहले 24 घंटों के भीतर यह मात्रा बछड़े के शरीर के वजन के 10% के बराबर होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, 30 किलोग्राम के बछड़े को पहले दिन लगभग 3 लीटर कोलोस्ट्रम की आवश्यकता होती है। अच्छी गुणवत्ता वाला कोलोस्ट्रम उचित पाचन में मदद करता है, ऊर्जा प्रदान करता है और संक्रमणों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है।

दूध पिलाने का प्रबंधन

कोलोस्ट्रम पिलाने के शुरुआती कुछ दिनों के बाद, बछड़े को विकास में सहायता के लिए पूरा दूध या दूध का विकल्प दिया जाना चाहिए। बछड़ों को दिन में दो बार, आमतौर पर सुबह और शाम को दूध पिलाना चाहिए। मानक नियम यह है कि प्रतिदिन बछड़े के शरीर के वजन के 10% के बराबर दूध दिया जाए। बीमारियों से बचाव के लिए साफ बोतल या बाल्टी में दूध पिलाना ज़रूरी है। ज़रूरत से ज़्यादा दूध पिलाने या दूध में पानी मिलाने से दस्त जैसी पाचन संबंधी समस्याएँ हो सकती हैं, इसलिए दूध को संतुलित और स्वच्छ तरीके से पिलाना चाहिए। पहले सप्ताह के बाद, धीरे-धीरे, रूमेन के विकास को बढ़ावा देने के लिए दूध के साथ थोड़ी

मात्रा में बछड़े का स्टार्टर देना चाहिए। बछड़ों को लगभग 8-10 सप्ताह की उम्र में दूध छुड़ाया जा सकता है, जब वे प्रतिदिन 1 किलो बछड़े का स्टार्टर खाने में सक्षम हो जाते हैं।

ठोस आहार

रूमेन विकास और भविष्य में दूध उत्पादन क्षमता के लिए ठोस आहार आवश्यक है। बछड़े के लिए स्टार्टर, जो अनाज और प्रोटीन का एक अत्यधिक पौष्टिक मिश्रण होता है, पहले सप्ताह से ही थोड़ी मात्रा में दिया जाना चाहिए। बछड़े को शुरुआत में मुट्ठी भर दिया जाना चाहिए, और खपत के आधार पर मात्रा धीरे-धीरे बढ़ाई जा सकती है। चबाने और जुगाली करने की आदत में मदद के लिए 2-3 सप्ताह के बाद अच्छी गुणवत्ता वाला चारा या सूखा चारा दिया जाना चाहिए। एक महीने बाद थोड़ी मात्रा में हरा चारा दिया जा सकता है। प्रारंभिक जीवन में उच्च गुणवत्ता वाला ठोस आहार देने से तेज़ विकास, बेहतर स्वास्थ्य और शीघ्र परिपक्वता सुनिश्चित होती है।

जल प्रबंधन

बछड़े को जीवन के पहले सप्ताह से ही ताज़ा और स्वच्छ पेयजल उपलब्ध होना चाहिए। पानी पाचन में मदद करता है और निर्जलीकरण से बचाता है। कई किसान सोचते हैं कि दूध ही पर्याप्त मात्रा में पानी है, लेकिन रूमेन के कामकाज के लिए पानी ज़रूरी है। गंदे या दूषित पानी से दस्त और संक्रमण हो सकते हैं, इसलिए पानी के बर्तनों को रोज़ाना साफ़ करना ज़रूरी है। दूध में कभी भी पानी नहीं मिलाना चाहिए क्योंकि इससे अपच हो सकती है।

आवास और आश्रय प्रबंधन

बछड़ों को साफ़, सूखे और हवादार शेड में रखा जाना चाहिए जहाँ हवा और रोशनी पर्याप्त हो। नम, गंदा वातावरण निमोनिया और दस्त जैसी बीमारियों का कारण बनता है। संक्रमण को नियंत्रित करने और उचित निगरानी सुनिश्चित करने के लिए पहले दो महीनों के लिए बछड़ों के लिए अलग-अलग बाड़ों की सिफारिश की जाती है। पुआल, चूरा या रबर की चटाई जैसी बिस्तर सामग्री बछड़ों को गर्म और आरामदायक रखने में मदद करती है, इन्हें नियमित रूप से बदलना चाहिए। शेड को बछड़ों को बारिश, सीधी धूप और ठंडी हवाओं से बचाना चाहिए। प्रत्येक बछड़े के लिए लगभग 2-3 वर्ग मीटर जगह की आवश्यकता होती है। उचित आश्रय विकास में सुधार करता है और बीमारी के जोखिम को कम करता है।

स्वास्थ्य देखभाल पद्धतियाँ

अच्छे स्वास्थ्य और स्वच्छता बनाए रखने के लिए, बछड़ों को नियमित टीकाकरण और कृमिनाशक दवा देनी चाहिए। आंतरिक परजीवियों को नियंत्रित करने के लिए कृमिनाशक दवा 15 दिन की उम्र से शुरू की जानी चाहिए और हर तीन महीने में दोहराई जानी चाहिए। टीकाकरण खुरपका-मुँहपका रोग (एफएमडी), रक्तस्रावी सेप्टिसीमिया (एचएस) और ब्लैक क्वार्टर (बीक्यू) जैसी प्रमुख बीमारियों से बचाता है। भविष्य में चोटों से बचने के लिए 3-4 सप्ताह की उम्र में गर्म लोहे या पेस्ट का उपयोग करके सींगों को हटा देना चाहिए। कान पर टैग लगाने से पहचान प्रबंधन रिकॉर्ड करने और विकास पर नज़र रखने में मदद मिलती है। बीमारी का जल्द पता लगाने और बीमारी को फैलने से रोकने के लिए नियमित जाँच आवश्यक है।

सामान्य रोग और रोकथाम

भारतीय डेयरी फार्मों में बछड़ों की बीमारियाँ जैसे दस्त, निमोनिया, नाभि संक्रमण और परजीवी संक्रमण आम हैं। दस्त आमतौर पर अस्वच्छता या गलत आहार पद्धतियों के कारण होता है और इसे भोजन के बर्तनों को साफ रखकर और निर्जलीकरण की स्थिति में मौखिक पुनर्जलीकरण घोल देकर रोका जा सकता है। निमोनिया सर्दियों या नम वातावरण में आम है और गर्म बिस्तर और अच्छे वेंटिलेशन से इसे रोका जा सकता है। नाभि का संक्रमण नाभि की ठीक से देखभाल न करने के कारण होता है, इसलिए आयोडीन युक्त पानी देना बहुत ज़रूरी है। नियमित रूप से कृमिनाशक दवा देने से कृमि नियंत्रित होते हैं और साफ़-सफ़ाई बनाए रखने से अधिकांश संक्रमणों से बचाव होता है।

मौसमी प्रबंधन

अलग-अलग मौसमों के लिए अलग-अलग प्रबंधन रणनीतियों की आवश्यकता होती है। गर्मियों में, बछड़ों को छाया और ठंडा, साफ पानी देकर गर्मी से बचाना चाहिए। उपलब्ध होने पर पंखे या स्प्रिंकलर का इस्तेमाल किया जा सकता है। बरसात के मौसम में, फर्श को सूखा रखना चाहिए और साफ बिस्तर निमोनिया से बचाव में मदद करता है। सर्दियों में, बछड़ों को ठंड से बचाने के लिए पुआल, बोरियों या बछड़े की जैकेट जैसे मोटे बिस्तर का इस्तेमाल किया जाता है, क्योंकि कम तापमान के संपर्क में आने से निमोनिया का खतरा बढ़ जाता है और विकास धीमा हो जाता है।

रिकॉर्ड रखना

उचित रिकॉर्ड रखने से किसानों को विकास और प्रदर्शन पर नज़र रखने में मदद मिलती है। महत्वपूर्ण रिकॉर्ड में जन्म तिथि, लिंग, नस्ल, जन्म का वजन, कोलोस्ट्रम खिलाने का समय, टीकाकरण और कृमिनाशक की तिथियां, आहार सेवन और मासिक शरीर का वजन शामिल हैं। अच्छे रिकॉर्ड कमज़ोर बछड़ों की जल्द पहचान करने, प्रजनन की योजना बनाने और खेत प्रबंधन में सुधार करने में मदद करते हैं।

निष्कर्ष

भारत में स्वस्थ, मज़बूत और उत्पादक वयस्क पशुओं के उत्पादन के लिए डेयरी बछड़ों का उचित प्रबंधन आवश्यक है। समय पर कोलोस्ट्रम, संतुलित आहार, स्वच्छ आवास, नियमित स्वास्थ्य देखभाल और मौसम के अनुसार सुरक्षा प्रदान करके, किसान ऐसे बछड़ों का पालन-पोषण कर सकते हैं जो उच्च दूध देने वाली गायें और लाभदायक डेयरी पशु बन सकते हैं।